श्रीगणेश पूजाविधि

प्रतिष्ठापना पूजा

1. एक ताम्हन में कुछ अक्षत के उपर तीन सुपारियाँ रखिए. अब हाथ जोड़ कर आँख बंद कीजिए व **ॐ गं गणपतये** नमः का 24 बार जाप कीजिए.
2. ॐ _____नमः – यह जाप 24 बार कीजिए. नीचे दिए गए ईसवी सन के अनुसार उपरोक्त जाप का चयन कीजिएः
    a. 2011- ॐ ब्रह्मणस्पतये नमः
    b. 2012- ॐ वरदविनायकाय नमः
    c. 2013- ॐ प्रमथपतये नमः
    d. 2014- ॐ वक्रतुण्डाय नमः
    e. 2015- ॐ धूम्रवर्णाय नमः
    f. 2016- ॐ हेरम्बाय नमः
    g. 2017- ॐ धुण्डिराजाय नमः
    h. 2018- ॐ मयुरेश्वराय नमः
    i. 2019- ॐ लम्बोदराय नमः
    j. 2020- ॐ एकदन्ताय नमः
    k. 2021- ॐ महागणपतये नमः

I. 2022- ॐ गौरीपुत्राय नमः

इसे क्रमानुसार दोहराइये.....

3. तीनों सुपारियों को अक्षत वाले ताम्हन से उठा कर दुसरे ताम्हन में रखिए व अब इन पर अभिषेक कीजिए. अभिषेक करते हुए संपूर्ण अथर्वशीर्ष (शांतिमंत्र अथर्वशीर्ष व फलश्रुति) का पठन कीजिए. अभिषेक पहले पंचामृत, फिर सुगंधित जल व अंततः शुद्ध जल से कीजिए.
4. तद्पश्चात तीनों सुपारियों को स्वच्छता से पोंछ कर अक्षत वाले ताम्हन में रखिए. अब यह मंत्र एक बार कहें- एकदंतं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् । पाशांकुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम् ।। श्रीसिद्धिविनायकाय नमः। आवाहनार्थे अक्षतां समर्पयामि ।।
5. अब बीच में रखें हुए सुपारी को अष्टगंध व बाजू की सुपारियों को हल्दी कुंकूं अर्पण कीजिए (मूर्ति को भी) व इस मंत्र का एक बार जाप कीजिए- अष्टगंधसमायुक्तम् सुगंधद्रव्यसंयुतम्। श्रीगन्धम् गणाध्यक्ष स्वागतार्थ प्रतिगृह्यताम् ।।
6. ॐ श्रीसिद्धिविनायकाय हेरंबगणेशाय नमः। यज्ञोपवीतम् समर्पयामि।। यह मंत्र एक बार कहते हुए, सुपारी व मुर्ति को यज्ञोपवीत (जनेऊ) अर्पण कीजिए.
7. ॐ श्रीसिद्धिविनायकाय श्रीधुंडीराजगणेशाय नमः। वस्त्रम् समर्पयामि।। यह मंत्र एक बार कहते हुए, सुपारी व मुर्ति को कार्पासवस्त्र अर्पण कीजिए.

8. सुमुखः एकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशी गणाधिपः ।। ॐ श्रीसिद्धिविनायकाय भालचंद्राय गजाननाय नमः। सुगंधित-रक्तपुष्पम् समर्पयामि।। यह मंत्र एक बार कहते हुए गणपति (सुपारी व मुर्ति) को लाल फूल, सुगंधित फूल एवं दूर्वा अर्पण कीजिए.
9. ॐ श्रीसिद्धिविनायकाय ब्रह्मणस्पतये नमः। धूपदीपौ समर्पयामि।। यह मंत्र एक बार कहते हुए धूप व निरांजन (दीप) गणपति (सुपारी व मुर्ति) पर घुमाइए.
10. ॐ श्रीसिद्धिविनायकाय विघ्नान्तकाय नमः।

    ॐ प्राणाय नम । :

    ॐ अपानाय नम । :

    ॐ व्यानाय नम । :

    ॐ उदानाय नम । :

    ॐ समानाय नम । :

    ॐ ब्रह्मणे नमः ।।

    यह कहते हुए, गणेशजी के सामने जल में दो उंगलियाँ डुबो कर एक चौकोर बनाइए व उस पर नैवेद्य अर्पण कीजिए. नैवेद्य के चारों तरफ जल घुमाइए व नैवेद्य पर दूर्वा रखिए. हाथ जोड़ कर यह कहिए- ॐ श्रीसिद्धिविनायकाय अन्नपूर्णानन्दनाय नमः।।

11. ॐ एकदंताय विद्महे। वक्रतुंडाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।
    इस गणेश गायत्री मंत्र का 108 बार पठन करते हुए गणेशजी को दूर्वा अर्पित कीजिए.
    गणेश गायत्री मंत्र का 108 बार पठन करने से श्रीगणेशजी की विघ्ननाशक स्वरूप में प्राणप्रतिष्ठा होती है.
12. अब साष्टांग नमस्कार कीजिए व तीन बार प्रदक्षिणा कीजिए. तद्पश्चात सामने खडे होकर – आवाहनम् न जानामि, न जानामि तवार्चनम्। पूजाम् चैव न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर।।
    यह कहते हुए पान के पत्ते पर अक्षत डालिये.

पुनर्मिलाप आवाहनम्

1. अक्षत से भरे ताम्हन (तीनों सुपारियों सहित) को उठा कर, दूर्वा के हारों से आच्छादित आसन पर रखें.
2. आचमन कीजिये.
3. ॐ **गं गणपतये** नमः का 12 बार जाप कीजिए.
4. ॐ _____ श्रीसिद्धिविनायकाय नमः। का 12 बार जाप करते हुए, सुपारी पर दूर्वा अर्पण कीजिये. इस मंत्र के खाली स्थान पर प्रतिष्ठा पूजा के क्रं. 2 पर जो नाम लिया था- वह नाम लीजिये.
5. **वक्रतुंड** महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ इस श्लोक को कहते हुए, दूर्वा अर्पण कीजिये.
6. पळी(चम्मच) में जल लीजिये व आवाहनम् न जानामि, न जानामि तवार्चनम्। पूजाम् चैव न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर।।
   मंत्रहीनम् क्रियाहीनम् भक्तिहीनम् सुरेश्वर।यत्पूजितम् मया देव परिपूर्णम् तदस्तु मे।।
   अपराध सहस्त्राणि च। क्रियन्तेऽहर्निशम् मया।

दासोऽयमिति माम् मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।। यह श्लोक कहते हुए जल एवं अक्षत ताम्हन में छोडिये.

7. सिन्दुरवदनो देवो यत्पादपंकजस्मरणम्। वासरमणिरिवतमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम्।। यह श्लोक कहते हुए सुपारी पर गंध, फूल, हरिद्रा व कुंकूं चढाईये.
8. पश्चात दूध शक्कर का नैवेद्य अर्पण कीजिये.
9. तत्पश्चात दीप प्रज्वलित कर तीन बार आरती की थाल घूमाईये और आरती कीजिये. अब मंत्रपुष्पांजलि कीजिये.
10. उपस्थित सभी श्रद्धावान अब दूर्वा अर्पण कर साष्टांग नमस्कार करें व पश्चात प्रदिक्षणा कीजिये.
11. इसके बाद आगे दिया गया मंत्र उच्चारित करते हुए सुपारी व मुर्ति के चरणों पर अक्षत अर्पण कीजिये.

    यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय पार्थिवीम्।
    इष्टकामप्रसिध्यर्थ पुनरागमनाय च।।
    ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणदमस्तु ।।
    अब मूर्ति का पीढ़ा थोड़ा सा हिला दीजिये.

12. मूर्ति के साथ निर्गमन करते हुए घर की दहलीज/गेट तक दूर्वांकुरों से दूध-पानी के मिश्रण का छिड़काव कीजिये और गणपति बाप्पा मोरया का उद्घघोष बारंवार कीजिये.

13. दहलीज के बाहर .... मूर्ति का मुख घर की ओर करें व घर की स्त्री आरती की थाल गणेशजी के सम्मुख घुमायें. दही-पोहे की पोटली साथ में दे. फिर सुखकर्ता दुःखकर्ता की आरती करें. आरती की थाल घर की स्त्री के पास ही रहे.
14. जल में विसर्जन करने के पहले, समुद्र/ नदी/ जलाशय के किनारे कपूर आरती कीजिये.
15. अंततः मूर्ति को जल में विसर्जित करें.